*स्वागत भाषण**

के.सी.चक्रवर्ती

भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर डॉ.डी.सुब्बाराव, विश्व बैंक के कंट्री डायरेक्टर श्री ओनो रुल, एम्बेसेडर रिचर्ड बाउचर, ओईसीडी के डिप्टी सेक्रेट्री जनरल, ओईसीडी विश्व बैंक तथा समूचे विश्व के देशों से पधारे डेलीगेट्स; भारतीय रिज़र्व बैंक तथा भारत में वित्तीय शिक्षा के प्रचार-प्रसार में लगी विनियामक संस्थाओं और एजेंसियों के साथीगण; देवियो और सज्जनो! रिज़र्व बैंक ओईसीडी तथा विश्व बैंक द्वारा संयुक्त रूप से वित्तीय शिक्षा पर आयोजित इस क्षेत्रीय सम्मेलन के अवसर पर भारत की राजधानी नई दिल्ली, जो कि एक समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परंपराओं का नगर है, में आपका स्वागत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। जैसा कि आपको ज्ञात ही है कि यह सम्मेलन वित्तीय साक्षरता और शिक्षा पर बनाए गए रूस/ओईसीडी/विश्व बैंक ट्रस्ट निधि की गतिविधियों के बारे में सूचनाओं का प्रसार करने के लिए आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला के एक अंश के रूप में आयोजित किया गया है। इसी श्रृंखला में, हाल ही में, दो अन्य सम्मेलन कार्टाजेना तथा नैरोबी में आयोजित किए गए थे। भारतीय रिज़र्व बैंक में हम इस महत्वपूर्ण सम्मेलन को सह आयोजित करके गर्व का अनुभव कर रहे हैं क्योंकि यह सम्मेलन, उन सभी जोखिमधारियों को एक साथ मंच पर लाया है जो कि सार्वभौमिक वित्तीय साक्षरता प्राप्त करने के भारत के अभियान में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। हमारा यकीन है कि यह सम्मेलन न केवल हमें, बल्कि अन्य देशों, विशेषकर एशिया प्रशांत क्षेत्र से आए डेलिगेट्स को भी एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान कर रहा है ताकि हम विचारों का आदान-प्रदान कर सकें और एक दूसरे के अनुभव से सीख सकें। इस सम्मेलन के सहभागी के रूप में हम विश्व बैंक और ओईसीडी को पाकर बहुत प्रसन्न हैं और उनका आभार व्यक्त करते हैं। ये दो ऐसी संस्थाएं हैं जिन्होंने समूचे विश्व में अभावग्रस्त लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए वित्तीय साक्षरता के प्रसार तथा वित्तीय प्रणालियों की लिवरेजिंग में अपार योगदान दिया है।

2. आगामी तीन दिनों में सहभागियों को विश्व के बड़े-बड़े विशेषज्ञों सहित देश विदेश के विद्वानों की प्रेरणादायी और ज्ञानवर्धक परिचर्चा सुनने को मिलेगी जिन्हें विभिन्न प्रकार का व्यावहारिक अनुभव है और विश्व के विभिन्न भागों में वित्तीय साक्षरता के कार्यान्वयन में उनके अनुभवों से बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। सम्मेलन के सत्रों को वित्तीय शिक्षा के सभी महत्वपूर्ण पक्षों पर केंद्रित किया गया है। उदाहरणतः, वित्तीय शिक्षा हेतु एक सुआयोजित राष्ट्रीय स्तर के फ्रेमवर्क की महत्ता को देखते हुए वित्तीय शिक्षा के लिए राष्ट्रीय कार्यनीति विकसित करने के अनुभवों पर एक इंटर एक्टिव पैनल डिस्कशन रखी गई है। राष्ट्रीय स्तर की कार्यनीति बनाते समय प्राथमिकता क्षेत्रों की पहचान के लिए विद्यमान वित्तीय साक्षरता स्तरों के आकलन की जरूरत को देखते हुए सम्मेलन में एक ऐसा सत्र शामिल किया गया है जो ऐसे मापन अभ्यासों से जमीनी स्तर के फीडबैक तथा वित्तीय साक्षरता स्तरों के मूल्यांकन हेतु सर्वेक्षणों के प्रयोग को समर्पित है। सम्मेलन में युवाओं तथा महिलाओं जैसे कुछ फोकस समूहों पर भी बल दिया गया है और इन समूहों के लिए अलग चर्चा सत्र रखा गया है। सभी सत्र इस तरह बनाए गए हैं जिससे समूचे अधिकार क्षेत्रों से आए कार्यान्वयन विशेषज्ञों के अनुभवों को बांटा जा सके तथा सीखने के अनुभव को इष्टतम बनाने के लिए सभी डेलिगेट्स में मुक्त सहभागिता को प्रोत्साहित किया जा सके।

* 4 मार्च 2013 को नई दिल्ली में भारतीय रिज़र्व बैंक के उप गवर्नर डॉ के.सी.चक्रवर्ती द्वारा दिया गया अभिभाषण

वित्तीय शिक्षा/साक्षरता की आवश्यकता

3. संक्षेप में सम्मेलन की रूपरेखा प्रस्तुत करने के बाद अब मैं सम्मेलन के थीम को संक्षेप में बताऊंगा। गत कुछ वर्षों में खासकर वैश्विक वित्तीय संकट के उपरान्त, वित्तीय शिक्षा और वित्तीय साक्षरता का महत्व अब काफी हद तक स्वीकार किया जाने लगा है। इसी मान्यता से प्रेरित होकर अब बहुत से देशों ने अपने नागरिकों में वित्तीय साक्षरता प्रचारित-प्रसारित करने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किये हैं। जैसा कि ओईसीडी की वित्तीय साक्षरता की परिभाषा इंगित करती है कि, यह वित्तीय जागरूकता, ज्ञान, कौशल, अभिरुचि तथा व्यवहार का एक मिश्रण है, जो मजबूत वित्तीय निर्णय लेने के लिए आवश्यक है और अंततः जिससे व्यक्तिगत वित्तीय भलाई प्राप्त की जा सकती है परंतु इस संबंध में मेरा मानना है कि वित्तीय साक्षरता न केवल लोगों की वित्तीय भलाई के लिए ही आवश्यक है बल्कि यह समूचे राष्ट्र की आर्थिक सलामती के लिए भी एक अनिवार्य शर्त है।

4. वित्तीय निरक्षरता केवल निर्धनों अथवा कम विकसित अर्थव्यवस्थाओं तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह सभी सामाजिक और आर्थिक स्तरों पर विद्यमान है। केवल अर्थव्यवस्था के विकास के चरण और एक ही देश में व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति के आधार पर ही, वित्तीय निरक्षरता में भिन्नता होती है। मुझे इसमें पक्का यकीन है कि वित्तीय प्रणाली से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को वित्तीय रूप से साक्षर होना चाहिए। इनमें न केवल वित्तीय सेवाओं के उपयोगकर्ता ही शामिल हैं बल्कि सेवाओं के प्रदाता तथा यहां तक कि नीति निर्माता और विनियामक भी शामिल हैं। जिन देशों ने वित्तीय शिक्षा कार्यक्रम सफलतापूर्वक चलाए हैं उन्होंने इसके काफी लाभ भी पाए हैं।

व्यक्ति के लिए लाभ

5. व्यक्ति स्तर पर वित्तीय साक्षरता/शिक्षा आवश्यक है क्योंकि यह वित्तीय क्षमता निर्मित करने में सहायक है। यह लोगों को अधिक जानकार, शिक्षित तथा अधिक आत्मविश्वास भरा बनाती है। उनके वित्तीय मामलों पर और अधिक कन्ट्रोल बनाती है तथा औपचारिक वित्तीय प्रणाली तक पहुंच बनाने के लाभों का पूर्ण उपयोग दिलवाती है। जो लोग अपनी वित्तीय परिस्थितियों को भलीभांति समझते हैं वे ही लोग समझदारी के फैसले कर पाते हैं और अपने भविष्य के लिए समुचित प्रावधान कर पाते हैं। वे ही लोग बीमे का उपयुक्त स्तर रखते हैं और बेहतर पेन्शन योजनाओं के साथ अपनी सेवानिवृत्ति आयु तक पहुंचते हैं। उधार लेते समय वे जरूरत से ज्यादा ब्याज नहीं देते और बचत करते समय कम ब्याज पर समझौता नहीं करते। मूलभूत वित्तीय जागरूकता रखनेवाले लोग जोखिम प्रतिफल समझौताकारी समन्वय को ज्यादा बेहतर तरीके से समझते हैं और अच्छे निवेश निर्णय लेते हैं जिससे कि वे धोखाधड़ी तथा सन्देहास्पद योजनाओं के कम शिकार होते हैं। वित्तीय शिक्षा, कर्ज़, गरीबी, रीपज़ेशन्ज, तनाव, बीमारी तथा यहां तक कि अपराध के स्तरों में भी कमी लाती है। संक्षेप में वित्तीय शिक्षा लोगों के जीवन तथा वित्तीय मामलों की गुणवत्ता को बढ़ाती है और धन संबंधी मामलों में उनमें सुरक्षा और आत्मविश्वास की भावना भरकर उनके मन में शांति लाती है।

वृहत् अर्थव्यवस्था के लिए लाभ

6. वृहत् दृष्टिकोण से भी, वित्तीय साक्षरता/शिक्षा के कई सकारात्मक प्रभाव है। वित्तीय साक्षरता, वित्तीय समावेशन तथा उपभोक्ता संरक्षण एक ऐसा त्रिकोण बनाते हैं जिसका सामूहिक रूप से वित्तीय स्थायित्व पर गहरा असर होता है। इस त्रयी की तीन

टांगें एक दूसरे के साथ मजबूती से जुड़ी होती हैं और प्रत्येक तत्व, दूसरे पर गहरा प्रभाव डालता है। इनमें से एक की भी अनुपस्थिति शेष लक्ष्यों को प्राप्त करना कठिन बना देती है। वित्तीय साक्षरता, वित्तीय समावेशन प्रयासों की मदद करती है क्योंकि यह औपचारिक वित्तीय प्रणाली के साथ जुड़ने के लाभों के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करती है जिनसे वित्तीय उत्पादों की मांग पैदा होती है। वित्तीय साक्षरता, उपभोक्ता सुरक्षा में मदद करती है क्योंकि यह उपभोक्ताओं को, वित्तीय उत्पादों में निहित जोखिमों और उत्पादों के फीचर्ज़ के बारे में जागरूक बनाने में बेहतर समझ देती है जिससे दुर्विक्री का जोखिम कम हो जाता है। विवाद के मामलों में यह उपभोक्ता को उपलब्ध शिकायत निवारण प्रणाली के पास जाने की जागरूकता और इच्छा प्रदान करती है।

7. वृहत् आर्थिक स्तर पर वित्तीय निरक्षरता की कीमत काफी बड़ी चुकानी पड़ती है जैसे बेरोजगारी, गरीबी, ऊंची व्यक्तिगत कर्ज़दारी तथा दुर्विक्री के कारण वित्तीय शोषण। इसके परिणामस्वरूप, परिहार्य लीकेज तथा वेस्टेज होती है जिन्हें कोई भी संसाधन से अभावग्रस्त देश नहीं चाहेगा। बचत की आदत वित्तीय शिक्षा के जरिए ही डाली जा सकती है जिससे घरेलू बचतों को उत्पादक कार्यों में लगाने में मदद मिलती है जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक वृद्धि को मदद मिलती है। वित्तीय शिक्षा के प्रयासों से निर्मित वित्तीय सेवाओं की बढ़ी हुई मांग वित्तीय बाजारों में और अधिक गहराई तथा विविधीकरण ला सकती है।

भारत में क्या स्थिति है

8. भारत में वित्तीय शिक्षा एक नीतिगत प्राथमिकता मानी गई है और सरकार, वित्तीय क्षेत्र के विभिन्न विनियामक, वित्तीय संस्थाएं तथा सिविल सोसायटी, इस संबंध में बहुत से प्रयास कर रहे हैं। केंद्रीय वित्त मंत्री की अध्यक्षता में गठित वित्तीय स्थायित्व और विकास परिषद् (एफएसडीसी) को अन्य बातों के साथ-साथ इसका भी अधिदेश प्राप्त है कि वह वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता के प्रचार-प्रसार पर ध्यान केंद्रित करे। एफएसडीसी के तत्वावधान में वित्तीय शिक्षा हेतु ड्राफ्ट राष्ट्रीय कार्यनीति, भारत के लिए तैयार की गई है। इसके अतिरिक्त हम स्कूली बच्चों के लिए वित्तीय शिक्षा पर भी स्वयं को केंद्रित कर रहे हैं और बच्चों पर कोई बोझ डाले बगैर, वर्तमान पाठ्यक्रम में ही वित्तीय साक्षरता की सामग्री को एकत्रित करने के लिए कई राष्ट्रीय पाठ्यक्रम बनानेवाली संस्थाओं को भी हमारे इस अभियान में शामिल कर रहे हैं। इस सम्मेलन के दौरान, रिज़र्व बैंक तथा अन्य एजेंसियों से जुड़े मेरे साथी, सार्वभौमिक वित्तीय साक्षरता के प्रति भारत के जोर के बारे में अपने-अपने गहन विचार प्रस्तुत करेंगे। हम आपके सुझावों और दृष्टिकोणों की प्रतीक्षा करेंगे कि हम इसे और बेहतर और भिन्न तरीके से कैसे कर सकते हैं।

निष्कर्ष

9. जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है वित्तीय साक्षरता एक वैश्विक समस्या है और हमारे सामने चुनौती बहुत बड़ी है। इसका सामना करने के लिए हमें सभी जोखिम धारकों और सभी देशों के साथ तालमेल बैठाने की जरूरत है। हालांकि हर देश के अनुभव अलग-अलग हो सकते हैं, मगर ऐसे शिक्षण बिंदु भी हो सकते हैं जिन्हें हम हर देश से सीख सकते है। मुझे आशा है कि संसार भर से यहां आए विद्वानों के ज्ञान और अनुभवों का लाभ सभी को मिलेगा और यही इस सम्मेलन की सफलता का सबूत होगा। मुझे पूरा यकीन है कि सार्वभौमिक वित्तीय शिक्षा के लिए किए जा रहे इन सामूहिक प्रयासों से व्यक्ति और संस्थाएं, समझदारी भरे वित्तीय फैसले लेने में समर्थ हो सकेंगे और इसके

परिणामस्वरूप, वैश्विक वित्तीय बाजार में काफी स्थिरता आएगी और ऐसे संकटों का असर इस पर कम होगा जैसा कि आज हम भुगत रहे हैं। किसी भी समाज में वित्तीय क्षमता निर्मित करने का यही अंतिम उद्देश्य होता है।

मैं इस सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं और उम्मीद करता हूं कि आनेवाले सत्रों में काफी गंभीर और सार्थक चर्चा इस मुद्दे पर होगी। मैं पुनः आप सबका स्वागत करता हूं और नई दिल्ली में आपके सुखी प्रवास की कामना करता हूं। धन्यवाद !